

प्रशिक्षण कार्यशाला 5 : सारांश तथा गाँव में कार्य करने की योजना बनाना

दिवस : 2
समयावधि : 45 मि.

प्रयोजन

इस प्रशिक्षण के दौरान जो सीखा (दोहराई, मूल्यांकन तथा मोड्यूल 9अ) उसकी समीक्षा करना तथा आने वाले महीनों में समुदाय के बीच कार्य की योजना बनाना।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यता आएगी:

1. बता पाना कि इस प्रशिक्षण कार्यशाला के समापन पर समुदाय के बीच क्या कार्य करेगी।

सामग्री

- कुछ नहीं

तैयारी

- प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान किए गए मूल्यांकन से प्राप्त अंक तालिका

प्रशिक्षण विधि:

प्रश्नोत्तर/ चर्चा (35 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं को कहे कि इस प्रशिक्षण के दौरान जो दोहराई और मूल्यांकन किया गया उसके बारे में वे अपने विचार व्यक्त करें। पूछें कि क्या अब भी कुछ कार्य उन्हें कठिन लगते हैं अथवा किसी विषय के बारे में कोई शंका है? यदि वे कुछ कठिनाईयों बतायें, तो उन्हें बोर्ड पर लिख दें।
2. आशाओं ने 2 महीने से 5 साल तक के बच्चों की बीमारियों के उपचार को पहचानना तथा उपचार करना सीखा है। बच्चों के निमोनिया, दस्त, कुपोषण, पेचिश तथा एनीमिया का उपचार कैसे करें तथा शिशु को अस्पताल कैसे भेजें यह वे जानती है। आशाएँ गाँव में काम करते हुए शिशुओं की उपर दी हुई बीमारियों को पहचानने, वर्गीकरण करने तथा उपचार पहचानने का अभ्यास करें। जिस शिशु में आशा बीमारी को पहचानेगी उसके लिये एक रिकार्डींग फॉर्म को भरेगी। रिकार्डींग फॉर्म अभ्यासपुस्तिका 2 में दिये गये है।
3. प्रशिक्षण कार्यशाला के पहले तथा दूसरे दिन किये गये मूल्यांकन का फल, प्रशिक्षक आशाओं को बतायें। जिन आशाओं का परीक्षाफल सन्तोषजनक हो उन्हें बधाई दें। जिन आशाओं का परीक्षाफल सन्तोषजनक न हो उन्हें सबके सामने शर्मिन्दा न करें। उनका हौसला बढ़ायें तथा अगली बार अधिक प्रयास करने के लिये उन्हें प्रेरणा दें। उन्हें बताये कि सुपरवाईजर अपने दौरे के समय उनसे अभ्यास करवाएँगे जिससे, प्रगति करने में उन्हें सहायता मिलेगी। जो कमी है उसे पूरा करने में उन्हें 1 महीने का समय मिलेगा। अगली प्रशिक्षण कार्यशाला से 1 दिन पहले उन्हें 1 दिन का अतिरिक्त प्रशिक्षण दिया जायेगा और दुबारा उनका मूल्यांकन किया जायेगा। जिससे बाकी आशाओं के साथ आ पहुँचने में उन्हें सहायता होगी।

4. बताएँ कि अब आशा नवजात शिशुओं की देखभाल के लिए पूरी तरह सक्षम है। प्रसव में उपस्थित रहने का महत्व बताएँ—जिसके बिना, दम घुटे शिशु को बचाया नहीं जा सकता। घर के दौरे पर जाने के लिए भी जोर डालें क्योंकि इससे वे माँ की आवश्यक देखभाल (स्तनपान, शिशु को गर्म रखना, आदि) कर सकेंगी। इससे माँ को समस्याएँ नहीं होंगी, तथा नवजात शिशु की समस्याओं का निदान और उपचार भी हो सकेगा। समझाएँ कि यदि परिवार को लगे कि शिशु अस्वस्थ है, और वे आशा को बुलाएँ तो उसे तुरंत जाना चाहिए। इस प्रकार वह शिशु का स्वास्थ्य बिगड़ने से पहले ही उसकी मदद करके जान बचा सकेगी।
5. बताएँ कि सामान्यतः सुपरवाईज़र महीने में एक बार आशा की सहायता तथा कार्य की जाँच हेतु उसके पास आयेंगी। इसके अतिरिक्त सुपरवाईज़र आशा की सेप्सिस तथा दम घुटने के निदान एवं उपचार की योग्यताओं की भी जाँच करेंगी। अपने दौरों में सुपरवाईज़र (गुड़िया पर गले का स्त्राव निकालने वाले उपकरण द्वारा) दम घुटने के उपचार का अभ्यास करते हुए आशा का निरीक्षण करेंगी।
6. सुपरवाईज़र जाँच सूची की सहायता से आशा की कार्यकुशलता का नियमित मूल्यांकन करेंगी। कार्यकुशलता में सुधार के लिए तथा कुछ रह गया हो तो वह बताने के लिए भी सुझाव देंगी। इस विधि से आशायें प्रभावकारी ढंग से सेवाएँ दे सकेंगी।
7. अब आशायें सेप्सिस का कोट्रिमॉक्सेज़ोल देकर उपचार करेंगी। इस लिए, उसे दवाओं के बारे में जानकारी रखनी चाहिए। ध्यान रखें की पर्याप्त मात्र में दवा उपलब्ध है, और ऐसा न हो कि दवा के अभाव से आशा शिशु का उपचार न कर पाये। इसी प्रकार उसके पास गले का स्त्राव निकालने वाले पर्याप्त उपकरण होना चाहिए।
8. आशाओं से कहें कि अगली प्रशिक्षण कार्यशाला से पहले, जब उन्हें समय हो, दी गई अध्ययन सामग्री अवश्य पढ़ें। अगली प्रशिक्षण कार्यशाला से पहले वे सेप्सिस तथा दम घुटने के निदान एवं उपचार की सामग्री ध्यान से पढ़ लें। अगली प्रशिक्षण कार्यशाला में सेप्सिस का उपचार जेंटामायसिन की सुई से तथा दम घुटने का उपचार बैग और मास्क से करना उन्हें सिखाया जायेगा।

सारांश (10 मि.)

- प्रशिक्षणार्थियों से पूछें कि वे समुदाय में अपने कार्य को सुनियोजित ढंग से कैसे करेंगी।

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
बता पाना कि इस प्रशिक्षण कार्यशाला के समापन पर समुदाय के बीच क्या कार्य करेगी।	प्रश्नोत्तर	जिन आशाओं का परीक्षाफल असन्तोषजनक है उनकी सुपरवाईज़र के लिये सूची। सुपरवाईज़र को इनके लिये अधिक प्रयास करने है।